B.A. Part - I
Paper - II
सल्तनत काल के समकालीन इतिहासकार (स्त्रोत)

(1) अल उतबी

महमूद गजनवी का दरबारी इतिहासकार था और इसी के आदेश पर उसने अपने ग्रन्थ तारीखे–यामिनी की रचना अरबी भाषा में की।

तारीखे यामिनी में उत्बी ने महमूद गजनवी के शासन काल की घटनाओं का वर्णन करने के साथ ही साथ महमूद गजनवी के भारत वर्ष पर आक्रमणों का विस्तार उल्लेख किया।

उतबी ने भारतवर्ष पर महमूद गजनवी के आक्रमण मुख्य उद्देश्य इस्लाम धर्म का प्रचार करना बताया है किन्तु इतिहासकारों द्वारा उत्बी के इस कथन को सही नहीं माना गया।

(2) फिरदौसी

फिरदौसो महमूद गजनवी का समकालीन फारसी का एक महान विद्वान था और उसने महमूद गजनवी के आदेश पर अपने ग्रन्थ ''शाहनामा'' की रचना फारसी भाषा में की। शाहनामा में फिरदौसी ने महमूद गजनवी की उपलब्धियों का उल्लेख किया है। ऐसा माना जाता है कि महमूद गजनवी द्वारा फिरदौसी को शाहनामा की रचना के लिए निर्धारित धन राशि नहीं दी गई थी इसलिए उसने बाद में आत्महत्या कर ली।

(3) अलबरूनी

अल बारूनी महमूद 'गजनवी' का समकालोन अरबी तथा फारसी का बहुत बड़ा विद्वान था। वह मूलतः खवारिज्म राज्य की राजधानी खेमा का निवासी था किन्तु बाद में गजनो में आकर बस गया।

Dr. Kailash Chand Gurjar

अलबरूनी बाद में महमूद गजनवी की सेनाओं के साथ भारत में आकर लाहौर (पंजाब) में बस गया। और भारत में अपने प्रवास के दोरान उसने संस्कृत के भारतीय ग्रन्थों का अध्ययन किया और उनके आधार पर गजनी लौटकर अपने ग्रन्थ 'तारीक–ए–हिन्द' की रचना अरबी में की, जिसे ''कितबल–हिन्द' और 'तहकीक–ए–हिन्द' भी कहा जाता है।

तारीक–ए–हिन्द में अलबरूनी ने 11 वी शताब्दी के हिन्दुस्तानियों के सामाजिक जीवन का विस्तार से उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त उसने हिन्दू धर्म, हिन्दू दर्शन और विज्ञान तथा साहित्य के क्षेत्र में जो प्रगति हुई, उसका भी विस्तार से उल्लेख किया।

(4) हसन निजामी

हसन निजामी सल्तनत काल का पहला इतिहासकार था और उसने सुल्तान कुतूबुद्दीन ऐबक के समय में अपने ग्रन्थ ताजुल–महासिर की रचना फारसी भाषा में की। इस ग्रन्थ में हसन निजामी ने 1191 में अर्थात् तराइन के प्रथम युद्ध से लेकर 1215 ई. तक दिल्ली सल्तनत का प्रारम्भिक इतिहास लिखा।

(5) मिन्हाज–उस–सिराज

मिन्हाज–उस–सिराज सल्तनत काल का दूसरा इतिहासकर और गुलाम (दास वंश) वंशों के सुल्तानों का समकालीन था। मिन्हाज मूलतः मध्य एशिया में स्थित गोर का निवासी था किन्तु 1227 में वह भारत में आकर सिन्ध और मुल्तान के तत्कालीन शासक नासिरूद्दीन कुवेचाकी सेवा में नियुक्त हो गय। किन्तु 1228 ई. में सिन्ध और मुल्तान को जीत लिया तब मिन्हाज इल्तुतमिश की सेवा में नियुक्त हो गया। इल्तुतमिश के 1239 ई. में जब ग्वालियर पर आक्रमण किया तब मिन्हाज उस अभियान में इल्तुतमिश के साथ तुर्की सैनिकों को युद्ध के दौरान ''तजकिरा'' सुनाने के लिए गया था।

तजकिरा युद्ध के दौरान मुस्लिम सैनिकों का उत्साहवर्धन के लिए उन्हें प्राचीन मुस्लिम यौद्धाओं की वीरता के जो किस्से सुनाये थे उन्हें तजकिरा कहा

जाता है। इल्तुतमिश के द्वारा 'ग्वालियर' पर विजय के बाद मिन्हाज को वहाँ की शाही मस्जिद का इमाम नियुक्त कर दिया। सुल्तान नासिरूद्दीन (1246) मुहम्मद के समय में दिल्ली सल्तनत का 'काजी–उल–कुजात' अथवा काजी–ए–मुमालीत (मुख्य न्यायाधीश) नियुक्त हुआ और उसी के समय में मिन्हाज ने अपने ग्रन्थ ''तबकात–ए–नासिरी' की रचना की। (फारसी भाषा में) इसमें मिन्हाज ने 1191 से लेकर 1260 ई. तक का प्रारम्भिक दिल्ली सुल्तानों का इतिहास लिखा है। उसने समकालीन प्रमुख मुस्लिम (सरदारों उलेमाऊ), विद्वानों और सन्तों की जीवनिया लिखी। मिन्हाज ने रजिया के पतन का मुख्य कारण, उसका स्त्री होना बताया है जैसा उसने लिखा है 'किन्तु रजिया, में एक प्रशासिक के सभी आवश्यक गुण थे किन्तु दुर्भाग्य से स्त्री थी इसलिए उसके सब गुण बेकार हो गए।

(6) अमीर खुसरो (1253–1325)

अमीर खुसरो न केवल सल्तनत काल का बल्कि मध्यकालीन भारत का फारसी का महानतम कवि हुआ है। उसका जन्म 1253 में उत्तर प्रदेश के एटा जिले में स्थित पटियाली नामक जगह पर हुआ। अमीर–खुसरो का पालन पोषण उसके नाना इमादुल मुल्क के किया गया जो बलबन के समय 'आरिज–ए–मुमालिक (केन्द्रीय सैनिक विभाग का अध्यक्ष) था। अमीर खुसरों सात दिल्ली सुल्ताना का समकालीन था। अमीर खुसरो सर्वप्रथम बलबन के ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान मोहम्मद के नदीम (दरबारी) के पद पर नियुक्त हुआ और बलवन के समय मंगोल उसको कैद करके ले गए। बलबन ने अमीर खुसरो को बाद में अपना दरबारी इतिहासकार नियुक्त किया और वह सुल्तान ग्यासुद्दीन तुग्लक तक इस पद पर नियुक्त रहा।

अमीर खुसरो प्रसिद्ध सूफी सन्त और दिल्ली के निवासी निजामुद्दीन आलिया का शिष्य था तथा प्रसिद्ध इतिहासकार जियाउद्दीन बर्नी और अमीर हसन देहलवी उसके घनिष्ठ मित्र थे और अमीर हसन–देहलवी द्वारा रचित रचना फारसी भाषा में फवायत–उल–फौद के नाम से जानी जाती है, इसमें उसने निजामुद्दीन ओलिया (सूफी सन्त) के उपदेशों का संकलन किया था। जियाउद्दीन बर्नी ने अमीर खुसरो

द्वारा लिखे गए लगभग 100 काव्य ग्रन्थों का उल्लेख किया है जिनमें से 6 ग्रन्थ ऐसे है जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है जो निम्नलिखित हैं –

(i) **किरान–उस–सदाईन**– उस ग्रन्थ की रचना अमीर खुसरो ने सुल्तान कि कैकूदाब के समय में को। इस ग्रन्थ में अमीर खुसरो ने सुल्तान के कैकूबाद के शासन की घटनाओं का वर्णन करने के साथ ही साथ के केकूबाद और उसके पिता बुगरा खाँ के बीच अवध में हुई मुलाकात का वर्णन किया।

(ii) **मिफ्ता–उल–फुतुह** – इस ग्रन्थ की रचना उसने सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के समय में की और इस ग्रन्थ में उसने जलालुद्दीन खिलजी के शासन काल का उल्लेख किया हैं।

(iii) **खजाइनुल–फुतुह** :– इस ग्रन्थ को उसने अलाउद्दोन खिलजी के समय में लिखा था और इस ग्रन्थ को 'तारीख–ए–अलाई' भी कहा जाता है इस ग्रन्थ में अमीर–खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी के उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत की विजयों का उल्लेख किया है इसके साथ ही उसने इस ग्रन्थ में अलाउद्दोन के समय से हुए मंगोल आक्रमणों का वर्णन किया, क्योंकि वह स्वयं कुछ समय के लिए बलबन के समय में मंगोलो के कैद में रह चुका था।

(iv) **देनलरानी–खिज्र खाँ (आशिका)** – इसकी रचना भी अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी के समय में की थी और इस ग्रन्थ में उसने अलाउद्दीन खिलजी के ज्येष्ठ पुत्र खिज खाँ और गुजरात के राजा कर्ण की लड़की देवलरानी की प्रेमकथा का वर्णन किया है इसलिए इसे आशिका भी कहते है। इस ग्रन्थ में उसने अलाउद्दोन खिलजी के अन्तिम दिनों में मलिक काफर द्वारा सत्ता प्राप्ति के लिए गए षडयन्त्रों का विस्तार से उल्लेख किया है।

(v) **नुह–सिपहर** :– नुह सिपहर नामक ग्रन्थ अमीर खुसरो ने अलाउद्दोन के पुत्र कुतुबुद्दीन मुबारकसाह खिलजी के समय लिखा। इसमें उसने उसी के शासन काल का इतिहास लिखा तक और इसी ग्रन्थ में अमीर खुसरों ने

हिन्दुस्तान की बहुत प्रशंसा की और उसे विश्व के सुन्दर देशों में से एक बताया।

(vi) तुगलकनामा :– तुगलकनामा अमीर खुसरो के द्वारा तुग्लक वंश के सस्थापक ग्यासुद्दीन तुग्लक के समय लिखा गया और उसमे उसने उसी के शासन काल के केवल प्रथम वर्ष (1320–21) का वर्णन किया। अमीर खुसरो एक प्रसिद्ध संगीतकार भी था और उसी के द्वारा भारतीय हिन्दू भजन और कीर्तन के तर्ज पर कव्वालो की रचना की। अमीर खुसरों के द्वारा भारतीय वीणा तथा फारसी तमूरा दोनों तद्य–यंत्रों को मिलाकर एक नया वाद्य यंत्र का आविष्कार किया जो सितार के नाम से प्रसिद्ध है। अमीर खुसरों की मृत्यु भी 1325 में दिल्ली में अपने गुरु की सन्त निजामुद्दीन ओलिया के मरने के दिन हुई और उसका मकबरा दिल्ली में 'निजामुद्दीन ओलिया की दरगाह के पास बना हुआ है। अमीर खुसरो को ''तुती–ए–हिन्द'' (हिन्दुस्तान का तोता) कहा जाता है

(7) जियाउद्दीन बरनी :– जियाउद्दीन बरनी का जन्म 1287 ई. में बर्न (बुलन्द शहर) में हुआ और वह खिलजी सुल्तानों तथा तुगलक सुल्तानों का समकालीन था। बरनी सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक का घनिष्ठ मित्र था किन्तु फरोज तुगलक ने सुल्तान बनने के बाद बरनी की सारी सम्पत्ति वगैरा छीनकर उसे जेल में बन्द कर दिया क्योंकि उस पर यह आरोप था कि उसने फिरोज तुगलक के विरूद्ध मोहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद सिंहासन लिए ख्वाजाजहॉ का समर्थन किया था। बरनी ने जेल में रहकर ही फिरोज का विश्वास प्राप्त करने के लिए ग्रन्थ लिखे –

(i) तारीख–ए–फिरोजशाही

(ii) फतावह–ए–जहांदारी

(iii) शाहना–ए–मोहम्मदी– (पैगम्बर हजरत मोहम्मद की जीवनी)

(i) तारीख–ए–फिरोजशाही में बर्नी ने 1266 अर्थात् बलबन के राज्याभिषेक से लेकर 1357 ई. तक का दिल्ली सुल्तानों का इतिहास है इसमें भी उसने विशेष रूप से अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक सुधारों मोहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं का विस्तार से उल्लेख किया है।

(ii) फतवाह–ए–जहांदारी में बरनी ने मुस्लिम शासन व्यवस्था के सिद्धान्तिक स्वरूप का उल्लेख किया है जिसमें हमें सल्तनत काल में प्रचलित शासन व्यवस्था को समझने में मदद मिलती है। यद्यपि बरनी की तारीख–ए–फिरोजशाही' सल्तनत काल का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है किन्तु उसमें अनेक दोष भी विद्यमान है जैसे –

1. उसने घटनाओं का वर्णन ऐतिहासिक क्रम में नहीं किया।
2. उसने घटनाओं की तिथियाँ गलत दी है।
3. उसके ग्रन्थ में धार्मिक कट्टरता का उल्लेख मिलता है और उसने हिन्दूओं की अनावश्यक रूप से गहरी आलोचना की है।

(8) इब्नेबतूता– इब्नेबतूता विदेशी यात्री था और वह मोरक्को में स्थित टेनजियर नगर का निवासी था। वह 1333 ई. में मोहम्मद बिन तुगलक के समय में भारत आया। मोहम्मद बिन तुगलक ने इब्नेबतूता की विद्वता से प्रसन्न होकर उसे दिल्ली का काजी (न्यायाधीश) नियुक्त कर दिया किन्तु कुछ समय बाद मोहम्मद बिन तुगलक ने इब्नेबतूता को मतभेद हो जाने के कारण जेल में बन्द कर दिया। बाद में 1341 में मोहम्मद बिन तुगलक ने इब्नेबतूता को चीन के सम्राट तोगन तिमूर के दरबार में राजदूत बनाकर भेजा किन्तु मार्ग में नाव खराब हो जाने के कारण वह चीन न जाकर अपने देश मोख को वापस लौट गया।

इब्नेबतूता ने मोरक्कों लौटकर ही अरबी भाषा में अपना यात्रा वृतन्त लिखा जिसे इब्नेबतूता का रहैला या किताबुल रहला के नाम से भी जाना जाता है। रहला में इब्नेबतूता ने सर्वप्रथम मोहम्मद बिन तुग्लक की

योजनाओं का और उसके बाद समकालीन 14 वीं शताब्दी की मांगे सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विस्तार से उल्लेख किया है।

9. **इसामी (इजामी)** – इसामी सल्तनत् काल का प्रमुख इतिहासकार था और मोहम्मद बिन तुगलक का समकालीन था। इसने बाद में अपने ग्रन्थ फुतुह–उस–सलातीन में मोहम्मद बिन–तुगलक की बहुत के आलोचना की है उसका कारण यह था कि जब मोहम्मद बिन तुगलक द्वारा दिल्ली से दौलताबाद राजधानी स्थानान्तरित की गई थी तब दिल्ली से दौलताबाद जाते समय मार्ग में इसामी के पितामह की मृत्यु हो गई थी किन्तु इसामी दौलताबाद से वापिस दिल्ली नहीं लौटा और बहमनी राज्य के संस्थापक अलाउद्दीन–हसन बहमनशाह के दरबार में रहकर ही उसने अपने ग्रन्थ फुतुह–उस–सलातीन की फारसी भाषा में रचना की।

इस ग्रन्थ में इमामी ने महमूद गजनवी से लेकर मोहम्मद बिन तुगलक तक के भारत के मुस्लिम शासकों का इतिहास लिखा है और विशेष रूप से उसने इस ग्रन्थ में मोहम्मद तुगलक के शासनकाल की घटनाओं का विस्तार से उल्लेख किया है।

इमामी एक मात्र ऐसा इतिहासकार था जिसने आरामशाह को सुल्तान कुतुबुद्दीन का पुत्र बताया है इसके अतिरिक्त इसामी ने लिखा है कि मोहम्मद तुगलक होली, दीपावली आदि हिन्दू त्यौहारों में व्यक्तिगत रूप से भाग लेता था और उसके द्वारा अनेक महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर हिन्दुओं को नियुक्त किया गया था जैसे रतन को सेवान (सिन्ध) का गर्वनर और साईराज को केन्द्रीय मंत्री के पद पर नियुक्त किया था साथ ही उसने लिखा है कि मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार में जिनप्रवाह सूरी और राजशेखर नामक दो जैन विद्वान रहा करते थे जिनका सुल्तान गहरा सम्मान करता था।

10. **शम्से सिराज अफीफ**– अफीफ फिरोज तुगलक का समकालीन सल्तनतकाल का एक प्रमुख इतिहासकार हुआ है और उसने फिरोज के

समय में ही अपने ग्रन्थ तारीख–ए–फिरोजशाही की फारसी भाषा में रचना की। अफीफ ने तारीख–ए–फिरोजशाही में फिरोज तुगलक के पूरे शासनकाल का अर्थात् (1351–88) तक .... विस्तार से उल्लेख किया है और विशेष रूप से फिरोज तुगलक के प्रशासनिक सुधारों का उसने महत्वपूर्ण वर्णन किया है।

11. **याहिया बिन अहमद सरहिन्दी** :– याहिया सरहिन्दी सैयद सुल्तान मुबारकशाह (1421–34) का दरबारी इतिहासकार था और उसी के आदेश पर उसने अपने ग्रन्थ तारीख–ए–मुबारकशाही की फारसी में रचना की। तारीख–ए–मुबारकशाही में पहिया सरहिन्दी ने सर्वप्रथम तुग्लक सुल्तानों का इतिहास लिखा है और उसके बाद उसने मुबारक शाह तक सैयद वंश का इतिहास लिखा और सैयद वंश के बारे में जानकारी प्राप्त करने का हमारा सबसे प्रमुख ग्रन्थ याहिया–सरहिन्दी कृत तारीख–ए–मुबारकशाही है।

12. अब्दुल्ला खाँ– अब्दुल्ला खा यद्यपि मुगल सम्राट जहॉगीर का समकालीन था तथा वह अफगान (पठान) था और जहॉगीर के समय में अब्दुल्ला खॉ ने अपने ग्रन्थ ''तारीख–ए–दाऊदी'' की फारसी भाषा में रचना की। तारीख–ए–दाऊदी में अब्दुल्ला खाँ ने केवल ''लोदी वंश का इतिहास'' (1451–1526) लिखा है और लोदी वंश के बारे में जानकारी प्राप्त करने का हमारा सबसे मुख्य ग्रन्थ अब्दुल्ला खॉ कृत तारीख–ए–दाऊदी है।

Dr. Kailash Chand Gurjar

प्रश्न– मोहम्मदगौरी के विरूद्ध पृथ्वीराज के द्वारा किए गए प्रतिरोध का आलोचनात्मक मूल्याकन कीजिए (200 शब्द)

अथवा

मोहम्मद गौरी के विरूद्ध पृथ्वीराज की असफलता के करना कारण थे।

उत्तर– भारतवर्ष पर जब मोहम्मदगौरी के आक्रमण हुए तब (पृथ्वीराज) अजमेर के चौहान शासक पृथ्वीराज III की गिनती उत्तर भारत के सबसे प्रमुख व शक्तिशाली शासक में की जाती थी और पृथ्वीराज का राज्य दिल्ली से आगे पंजाब में स्थित भटिण्डा के किले तक फैला हुआ था।

मोहम्मद गौरी द्वारा (भटिण्डा के किले पर 1190 ई.) पंजाब को जीत लेने के बाद उसके राज्य की सीमाएं पृथ्वीराज के राज्य से मिलने लगी। जब मोहम्मदगौरी द्वारा पंजाब को जीत लेने के बाद मोहम्मद गौरी के आक्रमण पृथ्वीराज के राज्य पर हुए और जब मोहम्मद गौरी द्वारा 1190 में मटिण्डा के किले पर आक्रमण करके (जिससे मुस्लिम इतिहासकारों ने तवर हिन्द के नाम से पुकारा) अधिकर कर लिया। तब भटिण्डा के किले को लेकर मोहम्मद गौरी व पृथ्वीराज III के बीच 1191 ई. में तराइन का प्रथम युद्ध हुआ। जिसमें पृथ्वीराज द्वारा मो. गौरी को पराजित कर दिया गया।

तराइन के प्रथम युद्ध में पराजित हो जाने के बाद पृथ्वीराज III से अपनी पराजय का बदला लेने के लिए 1192 ई. में चौहान राज्य पर पुनः आक्रमण किया, जिसके फलस्वरूप 1192 ई. में मोहम्मद गौरी और पृथ्वीराज के बीच तराइन का द्वितीय युद्ध हुआ। जिसको इस बार मो. गौरी द्वारा पृथ्वीराज को पराजित कर दिया गया।

तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय हो जाने के बाद भारत में चौहानों की शक्ति छिन्न–भिन्न हो गई और चौहान राज्य पर भी मोहम्द गौरी का अधिकार हो गया। जहा तक पृथ्वीराज III की मृत्यु का प्रश्न है इसके बारे में चरदरवरदाई (पृथ्वीराज रासो) मिन्हाज–उस–सिराज उस–तिराज (तनकति नासिरी)

हसन निजामी (ताजुल महामिर) तीनो इतिहासकारों ने पृथ्वीराज की मृत्यु क्रमशः गजनी, सुरस्सी व अजमेर में मानी। किन्तु इन तीनों में इतिहासकारों द्वारा हसन निजामी का मत अधिक सही माना जाता है क्योंकि हसन निजामी के कथन की पुष्टि पृथ्वीराज III के कुछ ऐसे सिक्कों के द्वारा भी होती है जो तराइन के द्वितीय युद्ध के बाद पृथ्वीराज के द्वारा ढलवाये गए थे और जिनमें पृथ्वोराज के साथ–साथ हमीर का भी उल्लेख मिलता है उसका इतिहासकारों ने मोहम्मद से समीकरण किया है।

इस प्रकार पृथ्वीराज III व मो. गौरी के बीच हुए संघर्ष के अन्त में पृथ्वीराज III की पराजय हो गई और उसके साथ ही भारत में चौहानों की शक्ति छिन्न–भिन्न हो गइ तथा चौहान राज्य पर भी तुर्कों का अधिकार हो गया।

पराजय के कारण

मोहम्मद गौरी के विरूद्ध पृथ्वीराज III का असफलता के मुख्य कारण निम्नलिखित थे –

1. तराइन के प्रथम युद्ध के बाद पृथ्वीराज III द्वारा अपनी सीमाओं की सुरक्षा की कोई उचित व्यवस्था नहीं किया जाना।
2. तराइन के प्रथम युद्ध के बाद जैसा कि चन्दर बरदाई (पृथ्वीराज रासो से हमे ज्ञात होता है कि पृथ्वीराज संयोगिता में विवाह कर भोग विलास में लिप्त हो गया और उसने राज्य कार्य की पूर्णरूप से उपेक्षा कर दी थी।
3. तराइन के द्वितीय युद्ध में मो. गौरी की तुलना में पृथ्वीराज की सैनिक संख्या काफी कम थी क्योंकि उसकी मुख्य सेना उसके सेनापति स्कन्द के नेतृत्व में बुन्देलखण्ड पर आक्रमण करने गई हुई थी।
4. तराइन के द्वितीय युद्ध में मो. गौरी द्वारा संधिवार्ता द्वारा चौहान सेनाओं को युद्ध की तरफ से शीतल बना देना और लम्बे युद्ध के बाद थकी हई चौहान सेना पर अपनी रिजर्व सेना से आक्रमण कर उसको पूर्णरूप से परास्त कर दिया गया था।

5. डा. दशरथ शर्मा (पृथ्वीराज चौहान) ने मोहम्मद गौरी के विरूद्ध पृथ्वीराज की पराजय का एक मुख्य कारण पृथ्वीराज को किसी भी भारतीय की मदद प्राप्त नहीं होना माना।

6. डा. दशरथ शर्मा का मानना है कि पृथ्वीराज की तुलना में मो. गौरी श्रेष्ठ सेनानायक था क्योंकि वह युद्ध में हर प्रकार के छल और कपट का प्रयोग करने में दक्ष था।

प्रश्न भारतीय शासकों के विरूद्ध तुर्कों की सफलता के मुख्य कारणों की विवेचन कीजिए ?

उत्तर– यद्यपि हसन निजामी (ताजुल महासिर) और मिन्हाज–उस–सिराज (तबकाते नासिरी) आदि समकालीन इतिहासकारों ने भारत–तुर्की आक्रमणों का विस्तार से उल्लेख किया हैं किन्तु भारतीय शासकों विरूद्ध तुर्कों की सफलता के क्या कारण थे इस पर उन्होंने कोई प्रकाश नहीं डाला है –

किन्तु कुछ आधुनिक अंग्रेज इतिहासकारों जैसे एलफिस्टन, विन्सेट स्मित आदि ने भारतीय शासकों के विरूद्ध तुर्कों की सफलता के कारणों की विस्तार से विवेचना की है और उन्होने भारतीय शासकों के विरूद्ध तुर्कों की सफलता का मुख्य कारण यह माना है कि तुर्क भारतीय सैनिकों की तुलना में श्रेष्ठ सैनिक थे। वे शीत प्रदेश के निवासी थे, मॉसाहारी थे और युद्ध विद्या से पूर्ण निपुण थे।

किन्तु उपर्युक्त अंग्रेज इतिहासकारों के इस मत को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि तुर्कों को भारत में जिन राजपूतों की मुकाबला करना पड़ा वे भी मांसाहरी थे और इन्ही राजपूत सैनिकों ने तुर्कों को कई बार युद्धों में पराजित भी किया था अतः भारत में तुर्कों की सफलता का मुख्य कारण उनका राजपूतों से श्रेष्ठ सैनिक होना नहीं था बल्कि भारतीय शासकों के विरूद्ध तुर्कों की सफलता के अन्य कई कारण थे जिनकी विवेचना हम निम्न प्रकार कर सकते है –

1. सैनिक कारण :–

1. तुर्कों की सेना का मुख्य आधार घुड़सवार सेना थी जो अपनी गतिशीलता के लिए प्रसिद्ध थी जबकि भारतीय सेना का मुख्य अंग पैदल सेना थी जिसे तुर्की घुड़सवार अपनी गतिशीलता से आसानी से छिन्न–भिन्न कर देते थे।

2. **आर. सी. स्मेल ने अपनी पुस्तक (क्रुसेडिंग बार फेयर)** : में तुर्कों की सफलता का मुख्य कारण उनका श्रेष्ठ होना माना है। इनका मानना है कि तुर्क धर्नुविद्या में इतने निपुण थे वे तेज दौड़ते घोडे की रकाब पर खड़े होकर किसी भी दिशा में शत्रु पर तीरों की बौछार कर सकते है।

3. तुर्कों द्वारा भारतीय शासकों के विरूद्ध युद्ध में जो रिजर्व सेना का प्रयोग किया गया, वह भी उनकी असफलता का एक मुख्य कारण सिद्ध हुई। उदाहरण – जब दिन भर भीषण युद्ध से चौहान सेनाए पूर्णतः थक चुकी थी तब मोहम्मद गौरी ने अपनी 12000 घुड़सवारों की रिजर्व सेना से चौहान सेना पर आक्रमण किया तो वे इस तरोताजा तुर्क का मुकाबला नहीं कर सके और युद्ध से मैदान से भाग निकले।

1. राजनीतिक कारण :–

भारतीय शासकों के विरूद्ध तुर्कों की सफलता का एक मुख्य कारण भारतीय शासकों में राजनीतिक एकता का अभाव होना था। जब भारत पर तुर्कों के आक्रमण हुए, उस समय भारत किसी एक शासक के अधिकार में न होकर अलग राज्यों में बँटा हुआ था और इन राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध भी मधुर नहीं थे अतः भारतीय शासक कभी भी तुर्कों के विरूद्ध संगठित होकर युद्ध नहीं कर सके और तुर्कों द्वारा भारतीय शासकों को एक–एक करके आसानी से पराजित कर दिया गया।

2. सामाजिक कारण :–

तुर्कों के विरूद्ध भारतीय शासको की पराजय का एक मुख्य कारण भारत की सामाजिक व्यवस्था और जातीगत भेदभाव का भी मुख्य योगदान रहा। हमारी

सामाजिक व्यवस्था में युद्ध तो लड़ना और शासन करना केवल राजपूतों का ही मुख्य कार्य माना जाता था फलस्वरूप तुर्कों को भारत में समस्त या भारतीय जनता के विरोध का मुकाबला करके केवल मुट्ठीभर राजदूतों के विरोद्धा का ही सामना करना पड़ा। जिन्हे वे आसानी से हराने में कामयाब हो गये।

अगर तुर्कों का भारत की समस्त जनता द्वारा संगठित होकर मुकाबला किया जाता, तो सम्भवतः तुर्क भारत में विशेष सफलता प्राप्त नहीं कर सकते थे और अधिकांश भारतीय इतिहासकारों ने जिनमे प्रो. खलिक अहमद निजामी (दिल्ली सल्तनत) प्रमुख है भारत में तुर्कों की सफलता का सबसे मुख्य कारण हमारी सामाजिक व्यवस्था और जातिगत भेदभाव मानते है।

3. व्यक्तिगत कारण :–

महमूद गजनवी, मोहम्मद गौरी, कुतुबुद्दीन ऐबक आदि कुशल और अनुभवी सेनानायक थे यद्यपि जयपाल, आनन्दपाल, पृथ्वीराज तृतीय और जयचन्द गहड़वाल आदि भारतीय शासक भी वीर और साहसी सेनानायक थे किन्तु महमूद गजनवी और मोहम्मद गौरी इन भारतीय शासकों की तुलना में अधिक बुद्धिमान और दरदर्शी माने जाते थे वे युद्धों में हर प्रकार के छल और कपट का प्रयोग करने में दक्ष थे।

4. आकस्मिक कारण :–

भारतीय शासकों के विरूद्ध तुर्कों की सफलता में आकस्मिक कारणों का भी मुख्य योगदान है जैसे– आनन्दपाल के हाथी का बिगड़ जाना, युद्ध में जयपाल की आँख में तीर लग जाना आदि कुछ ऐसे आकस्मिक कारण थे जिनके फलस्वरूप उनकी जीत हार में बदल गई।

इस प्रकार उपर्युक्त अनेक कारणों के फलस्वरूप ही तुर्क भारतीय शासकों के विरूद्ध सफलता प्राप्त करने में और अन्ततः भारतीय शासकों को पराजित करने में कामयाब हो गये।